| | | |
|---|---|---|
| Course | : | B.Ed., Part-II |
| Paper | : | XIV (शांति एवं मूल्य शिक्षा)<br>(Peace and Value Education) |
| Prepared by | : | Dr. Pallavi |
| Topic | : | विश्व–शांति हेतु प्रमुख संस्थाएँ<br>(Important Organization for World Peace) |

---

## 8.1 प्रस्तावना (Introduction)

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति एवं सुरक्षा स्थापित करने में जिन महत्वपूर्ण संस्थाओं द्वारा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। इन संस्थाओं द्वारा निभाई गई भूमिका की विस्तृत जानाकरी इस पाठ में दी जा रही है। इन संस्थाओं का उद्‌भव क्यों हुआ? किस वर्ष हुआ? इनके स्थापित होने के पीछे किन कारणों ने अपना योगदान दिया; वगैरह। इस पाठ में हम यह भी जानेंगे कि उपरोक्त संस्थाओं ने अपना दायित्व निभाने में कितनी सफलता प्राप्त की।

इस प्रकार विश्व शांति स्थापित करने हेतु स्थापित संस्थाओं के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे।

## 8.2 विश्व शांति से संबंधित महत्वपूर्ण संस्थाएँ (Important Oganization related to world peace)

इस पृथ्वी पर वैसे तो बहुत सारे युद्ध हुए, परन्तु प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् इस पर रोक लगाने के लिए विश्व स्तर पर एक संस्था निर्माण हुआ था, जिसका नाम राष्ट्र संघ था। हालॉकि इस संस्था के बावजूद द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध की विभीषिक प्रथम विश्वयुद्ध से कई गुना ज्यादा था। उस समय सभ्य देशों ने विश्व सुरक्षा पर चिंता जताई। इस चिंता को ध्यान में रखकर विश्व शांति तथा सुरक्षा के तहत् समय–समय पर विश्व स्तर, विकसित देश, विकासशील देश आदि बातों का ध्यान रखते हुए अनेक संस्थाओं का निर्माण हुआ; ताकि पृथ्वी के पर्यावरण तथा इसकी सुरक्षा से संबंधित बातों का मंच अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो तथा विश्व के देशों को संबंधित जानकारी तथा गाइडलाइन उपलब्ध करवाया जा सकें।

इसके तहत आने वाले संस्थाओं को अब हम विस्तारपूर्वक जानेंगे।

### 8.2.1 संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO)

इस संस्था का गठन द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् राष्ट्र संघ के स्थान पर किया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ही दुनियाभर ने स्थायी शांति एवं सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, कई सम्मेलनों के पश्चात् 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ का उद्भव एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन के रूप में हुआ ताकि विश्व में मानव जाति की सुरक्षा का ध्यान रखा जा सके। इसका मुख्यालय जेनेवा अवस्थित है तथा करीब 182 देश इसके सदस्य हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ का प्रमुख उद्देश्य (Main Aim of UNO) इसके चार्टर में वर्णित है। इसके प्रस्तावना में यह घोषण की गई है कि अंतर्राष्ट्रीय संगठन में शामिल हुई मानव जाति का लक्ष्य है आने वाली पीढ़ियों को युद्ध जैसी भयंकर त्रासदी से बचाना। इस चार्टर के अनुसार अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखना है। इसके अलावा जिन उद्देश्यों को चार्टर के पहले अध्याय के पहले अनुच्छेद में वर्णन किया गया, वे हैं:

1. अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा को बनाए रखना तथा इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए झगड़ों का शांतिपूर्ण निपटारा और सशस्त्र आक्रमण की स्थिति से निटपने के लिए प्रभावशाली सामूहिक कार्यवाही का प्रयत्न करना।
2. आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा मानवीय किसी भी प्रकार की अंतर्राष्ट्रीय समस्या को सुलझाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करना।
3. अंतर्राष्ट्रीय विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करना।
4. राष्ट्रों के आत्मनिर्णय और उपनिवेशवाद विघटन की प्रक्रिया को गति देना तथा निरस्त्रीकरण के अलावा नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की स्थापना करना।

उपर्युक्त सभी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के द्वारा अपनी स्थापना काल से लेकर आज तक वैश्विक स्तर पर अनेक प्रयास किए गए। इन प्रयासों का ही प्रतिफल है कि विश्व की मानव जाति को पुनः प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध जैसी त्रासदी का सामना नहीं करना पड़ा। कुछ अपवादों को छोड़ दें तो अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा एवं शांति में अहम् भूमिका रही है। इसके सुरक्षा परिषद् के स्थायी सदस्य अमेरीका, इंगलैण्ड, फ्रांस, रुस और चीन को वीटो शक्ति का अधिकार है।

### 8.2.2: सार्क (SAARC)

सार्क की स्थापना का प्रयास सात देशों की 1981 में कोलम्बों में विदेश सचिव स्तर की बैठक के दौरान हुआ। दिसम्बर 1985 में ढ़ाका में प्रथम शिखर सम्मलेन आयोजित किया गया। जिसमें भारत, नेपाल, बंग्लादेश, भूटान, पाकिस्तान और श्रीलंका इसके संस्थापक सदस्य बने। अब मालदीव तथा अफगानिस्तार को मिलाकर कुल 8 सदस्य देश हो चुके हैं।

औपनिवेशिक युग की समाप्ति के बाद दक्षिण एशियाई राष्ट्रों के संबंधो के इतिहास में सार्क (SAARC) की स्थापना एक मील का पत्थर था, क्योंकि इसकी स्थापना से पूर्व दक्षिण एशियाई देश अपने क्षेत्रीय संबंधों के संघर्षपूर्ण स्थिति के लिए जाने जाते थे। यह (सार्क) अन्य क्षेत्रीय संगठनों तथा यूरोपीय संघ, आसियान, खाड़ी सहयोग परिषद् से भिन्न है; क्योंकि इन अधिकतर क्षेत्रीय संगठनों पर बाहरी वातावरण, विशेषकर महाशक्तियों

का प्रत्यक्ष या परोक्ष प्रभाव रहा है। इन बाहरी प्रभावों के खतरों को क्षेत्रीयवाद एवं क्षेत्रीय सहयोग की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सार्क की स्थापना का उद्देश्य (Aim of SAARC) क्षेत्रीय सहयोग की वचनबद्धता मूर्तरुप, मैत्री, विश्वास और आपसी सूझबूझ के साथ साझा समस्याओं, को हल करने की दिशा में मिलकर कार्य करना था। व्यापक परिप्रेक्ष्य में आर्थिक विकास की व्यूह रचना के अलावा, इसे एक प्रतिरक्षात्मक व राजनीतिक व्यवस्थाओं को नया मोड़ देने में सक्षम साबित हो सकता है। सार्क का झुकाव आर्थिक सहयोग, पर्यावरण, गरीबी उन्मूलन आदि प्रमुख क्षेत्रों में ठोस विकासोन्मुख विचार–विमर्श की ओर है।

सार्क 1985 में स्थापना से लेकन आज तक सराहनीय कार्य करते हुए दक्षिण एशिया की आवाज बना हुआ है। मुख्य रुप से संगठनात्मक गतिविधियों का समन्वित कार्यक्रम, व्यापार उदारीकरण (साप्टा और साफ्टा), गरीबी उम्मूलन, संयुक्त उद्यम स्थापित करने, क्षेत्रीय परियोजनाओं के लिए सार्क कोष, शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विकास हुआ है। सार्क के मंच से सामाजिक और नागरिक विकास; जैसे– गरीबी उम्मूलन, साक्षरता, महिला सशक्तिकरण आदि के लिए क्षेत्रीय खाद्य बैंक (2007) तथा सार्क विकास फण्ड की स्थापना की गई है। इसी प्रकार, प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए ढ़ाका, नई दिल्ली तथा मालदीव में सार्क प्राकृति आपदा प्रबंधन की स्थापना की गई है।

सार्क ने कोलम्बों शिखर सम्मेलन (1991) में सर्वप्रथम "**दक्षिण एशिया वरीयता व्यापार**" समझौता (SAPTA) पर विचार किया और सातवें शिखर सम्मलेन 1993 (ढाका) में सर्वसम्मति से साफ्टा पर हस्ताक्षर किए तथा 1995 में इसे लागू करने के साथ सदस्य देशों में आपसी व्यापार और सीमा शुल्कों में कमी करके सहयोग बढ़ाने पर बल दिया है।

### 8.2.3: जी–20 (G–20)

जी–20 के अंतर्गत 19 सदस्य देश और यूरोपीय संघ शामिल है। जी–20 समूह में अर्जेन्टीना, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, इण्डोनेशिया, इटली, जापान, मेक्सिकों, रूस, सउदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, टर्की, ब्रिटेन व अमेरीका के अतिरिक्त भारत 9 यूरोपीय संघ भी शामिल हैं। एशियाई वित्तीय संकट के उपरांत 1999 में वित्त मंत्रियों व केन्द्रिय बैंकों के गर्वनरों की बैठक के रुप में G–20 की शुरुआत हुई। वॉशिगटन डी सी में 2008 में नेताओं की पहली शिखर बैठक सम्पन्न। हुई यह संगठन विश्व की प्रमुख विकसित एवं उभरती अर्थव्यवस्थाओं का एक मंच है। जिसका गठन मूलतः 1997 के एशियाई वित्तीय संकट के परिप्रेक्ष्य में 1999 में किया गया था। वैश्विक वित्तीय बाजार में स्थिरता लाने के उद्देश्य से गठित किया गया था। इसके गठन के पश्चात् इसके सदस्य देशों के वित्त मंत्रियों व केन्द्रीय बैंकों के गवर्नरों की वार्षिक बैठकें होती रही थी, G–20 शिखर सम्मलेन में यूरोपीय संघ का प्रतिनिधित्व यूरोपीय परिषद् (EC) के अध्यक्ष व यूरोपीय केन्द्रिय बैंक द्वारा किया जाता है। जी–20 की शक्ति एवं सार्थकता का आकलन इससे किया जा सकता है कि विश्व की दो–तिहाई जनंसख्या जी–20 देशों में निवास करती है तथा वैश्विक सकल राष्ट्रीय उत्पाद के 85 प्रतिशत भाग का उत्पादन इन देशों द्वारा किया जाता है तथा वैश्विक व्यापार का 80% प्रतिशत इन देशों द्वारा ही किया जाता है। हालाँकि G–20 का कोई सचिवालय या मुख्यालन नहीं है। सदस्य देशों द्वारा बारी–बारी से इसके शिखर सम्मलेन का आयोजन किया जाता है। मंदी की तीव्रता पर नियंत्रण के पश्चात् 2011 से यह शिखर सम्मलेन वर्ष में एक–एक बार ही होने लगा है।

### 8.2.4: आसियान (ASEAN)

दक्षिण–पूर्व एशिया के 10 देशों के समूह का आसियान (ASEAN–Association of South East Asain Nations) नामक संगठन है। इसके सदस्य देश में सम्मलित है, इंडोनेशिया, सिंगापुर, फिलीपींस, मलेशिया, ब्रूनेई, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस, म्यांमार और वियतनाम। आसियान का प्रमुख उद्देश्य सदस्य देशों की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और स्वतंत्रता को स्थापित रखते हुए विवादों का शांतिपूर्वक समाधान करना रहा है। आसियान के प्रमुख स्तम्भों में (i) आसियान राजनीतिक सुरक्षा समुदाय (ii) आसियान आर्थिक समुदाय तथा (iii) सामाजिक–सांस्कृतिक समुदाय हैं।

इस समूह का लक्ष्य था– "आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, सामरिक समन्वय के साथ परस्पर विकास को प्रोत्साहित करना था।

आसियान के 10 देशों और उसके कुछ सहयोगी (चीन, जापान, दक्षिण कोरिया, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और भारत) एक क्षेत्रीय मुक्त व्यापार समझौते को मूर्त्त रुप देने की सक्रिय कोशिश कर रहे हैं।

भारत लगातार आसियान देशों के साथ संबंध बनाए हुए हैं। यहाँ तक की भारत का कुल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का दस प्रतिशत आसियान देशों के साथ है। भारत को इसे और बढ़ाने पर ध्यान देना होगा। चीन के वर्चस्व से निबटने के लिए भारत को आसियान देशों से संबंध में प्रगाढ़ता बनाते हुए भारत–पाकिस्तान देश समुद्री परिवहन समझौतों को शीर्घ सम्पन्न कराने के लिए सक्रिय होना चाहिए। चीन की महत्वाकांक्षी 'वन बेल्ट वन रोड' प्रोजेक्ट के प्रति उत्तर में भारत को आसियान देशों के साथ जोड़ने की परियोजना को शीघ्र मुर्त रुप देना चाहिए।

### 8.2.5 नाटो (NATO)

यह 28 सदस्यीय देशों वाला यूरोपीय संगठन है। नाटों की स्थापना 12 सदस्य राष्ट्रों के साथ 1949 में हुई थी। बाद में 6 बार समय–समय पर नए सदस्य इसमें शामिल किए गए हैं। जिसके कारण अब इनके सदस्यों की संख्या 28 हो गई है। 1949 में 12 सदस्यों में बेल्जियम, कनाडा, डेनमार्क, फ्रांस, आइसलैण्ड, इटली, लक्जेमबर्ग, नीदरलैण्ड्स, नार्वे, पुर्तगाल, ब्रिटेन व अमरीका थे। बाद में, ग्रीस, टर्की, जर्मनी, लाटविया, लिथुवानिया, रूमानिया, स्लोवाकिया, स्लोवानिया, अल्बानिया एवं क्रोएशिया इससे जुड़ गए।

इस संगठन की स्थापना 4 अप्रैल 1949 को हुई। इसका मुख्यालय ब्रुसेल्स (बेल्जियम) में है। इस संगठन का उद्देश्य सामूहिक सुरक्षा था, जिसके अंतर्गत सदस्य राष्ट्र बाहरी हमले की स्थिति में सहयोग करने के लिए सहमत होगें। हालांकि शुरूआती दौर में यह संगठन एक राजनीतिक संगठन से अधिक नहीं था। लेकिन क्रोशियाई युद्ध ने सदस्य देशों के लिए प्रेरक का काम किया और दो अमरीकी सर्वोच्च कमांडरों के दिशानिर्देशन में एक एकीकृत सैन्य संरचना निर्मित की गई। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप से अपनी सेवाएँ हटाने से इंकार कर दिया और वहाँ साम्यवादी शासन की स्थापना का प्रयास किया। अमेरिका ने यूरोपीय देशों को साम्यवादी खतरों से आगाह किया परिणामस्वरूप यूरोपीय देश एक ऐसे संगठन के निर्माण हेतु तैयार हो गए, जो उनकी सुरक्षा करें। चुँकि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पश्चिमी यूरोपीय देशों ने अत्यधिक नुकसान उठाया था। इन देशों के आर्थिक पुनर्निर्माण में अमेरिका एक बहुत बड़ी आशा थी। अतः, अमेरिका द्वारा नाटो की स्थापना का स्वागत एवं समर्थन किया गया।

इस संगठन का उद्देश्य यूरोप पर आक्रमण की अवधि में अवरोधक की भूमिका निभाना था। पश्चिमी यूरोप में सोवियत संघ का विस्तार रोकना था एवं युद्ध की स्थिति में लोगों के मानसिक रूप से तैयार करना था। यूरोपीय राष्ट्रों के लिए सुरक्षा छत्र प्रदान करना, जिससे वे सैन्य तथा आर्थिक विकास के कार्यक्रम एक जुट होकर कर सकें। पश्चिम यूरोप के देशों को एक सूत्र में संगठित करना एवं 'स्वतंत्र विश्व' की रक्षा के लिए साम्यवाद के प्रसार को रोकना और यदि संभव हो तो साम्यवाद को पराजित करने के लिए अमेरिका की प्रतिबद्धता माना गया।

नाटो के स्वरुप व उसकी भूमिका को उसके संधि प्रावधानों के आलोक में इस प्रकार समझा जा सकता है कि आरंभ में ही कहा गया है कि हस्ताक्षरकर्त्ता राष्ट्र, सदस्य देशों की स्वतंत्रता, ऐतिहासिक विरासत, लोकतांत्रिक मूल्यों, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और कानून के शासन की रक्षा की जिम्मेदारी लेंगे। हस्ताक्षारित राष्ट्र का आपस में संबंध सहयोगात्मक होगा। इस संबंधित राष्ट्रों में से किसी एक पर आक्रमण सभी देशों पर आक्रमण माना जाएगा। इस स्थिति में, संधिकर्ता एकजुट होकर सैनिक कार्यवाही के माध्यम से एकजुट होकर तात्कालिक स्थिति का मुकाबला करेगें। इस प्रकार संधि का स्वरुप सदस्य देशों को सुरक्षा छतरी प्रदान करेगा।

नाटो ने पश्चिमी यूरोप के सदस्य देशों के मध्य एकीकरण में अहम भूमिका निभाई। इतिहास में पहली बार पश्चिमी यूरोप के शक्तिशाली देशों ने अपनी कुछ सेनाओं को स्थायी रुप से एक अंतर्राष्ट्रीय सैन्य संगठन के अंतर्गत रहना स्वीकारा। नाटो के गठन से अमेरिका के अलग–थलग पड़ने की नीति समाप्त हुई। नाटो का गठन शीतयुद्ध को बढ़ावा दिया और सोवियत रूस ने इसे साम्यवाद के विरोध में देखा। इस संगठन ने अमेरिका के विदेश नीति को भी प्रभावित किया।

## 8.2.6 गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement NAM)

"गुटनिरपेक्ष आंदोलन" का नाम 1961 में शीतयुद्ध काल में हुआ था। शीतयुद्ध से बचने के लिए ऐसे देशों ने एक संगठन बनाया, जो न तो अमरीका के साथ रहना चाहते थे और न ही तत्कालीन सोवियत संघ के साथ। सन् 1961 में बेलग्रेड में 25 विकासशील देशों की शुरूआती सदस्यता के साथ इस संगठन का गठन किया गया। भारत इसका संस्थापक सदस्य रहा है। यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति जोसिप टीटो, तात्कालिन भारतीय प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु, मिस्त्र के तत्कालीन राष्ट्रपति गमाल अब्दूर नासिर, इण्डोनेसिया के तत्कालीन राष्ट्रपति, सुकर्णो, एवं घाना के तात्कालीन राष्ट्रपति क्वामी कुमाह ने अपनी अग्रणी भूमिका निभाई थी। सन् 1945 में, केवल 51 देशों के साथ अस्तित्व में आए इस मंच के सदस्यों की संख्या अब 193 हो चुकी है। 'नाम' (NAM) के 17वें शिखर सम्मेलन का थीम "Peace, Sovereiginity and Solidarity for Development" था; इसे इसकी स्थापना के सिद्धांतों के अनुरुप बताया गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद दो महाशक्तियों के अलावा एक नई शक्ति का प्रादुर्भाव हुआ, जिसे तीसरी दुनिया के नाम से जाना जाने लगा। तीसरी दुनिया का अर्थ है एशिया, लैटिन अमरीका व अफ्रीका महाद्वीप के नवोदित राष्ट्रों के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करना। विश्व शांति, स्वतंत्रता और सामाजिक न्याय, सुरक्षा के लिए निरंतर प्रयासरत् रहना एवं अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में शीतयुद्ध की भूमिका पर नियंत्रण करना भी इस संगठन का उद्देश्य है। स्वतंत्र विदेश नीति को अपनाना, जिससे गुटनिरपेक्ष राजनीति से दूर रहा जा सके। इसके अलावा, शांतिपूर्व सह–अस्तित्व और सहयोग को बढ़ावा देना। सभी देशों गैर साम्यवाद एवं साम्यवादी, के साथ मित्रता का भाव रखते हुए विकास के लिए सहयोग करना।

इस संगठन के माध्यम से साम्राज्यवाद एवं उपनिवेशवाद का विरोध करना तथा स्वतंत्रता के लिए प्रयासरत् देशों का समर्थन देना। तीसरी दुनिया के नवोदित राष्ट्रों को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतंत्रता रीति–नीति पर चलने के लिए प्रेरित करना। इस संगठन के माध्यम से निशस्त्रीकरण एवं शस्त्र नियंत्रण को बढ़ावा देने की नीति थी। जातिवाद, रंगभेद, क्षेत्रीयता आदि के आधार पर हो रहे भेद–भाव का विरोध करना। द्विध्रुवीय व्यवस्था के स्थान पर बहुध्रुवीय व्यवस्था स्थापित करके, उसके स्थान पर स्वतंत्रता, समानता, सामाजिक न्याय और सर्व–कल्याण के सिद्धान्तों पर आधारित नई विश्व–स्थापना करना भी इस संगठन का उद्देश्य रहा। साथ ही संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका और प्रभाव में मजबूती लाने के लिए सहयोग देना, वगैरह कार्य रहा।

भारत गुटनिरक्षेप आंदोलन के संस्थापक राष्ट्रों में प्रमुख रहा। आजादी के बाद, यह आंदोलन भारत की विदेश नीति का प्रमुख आधार–स्तंभ रहा एवं शीत युद्ध के दौरान, भारत ने अपने कई राष्ट्रीय हित को प्राप्त किया।

## 8.2.7 युनेस्को (UNESCO)

यूनेस्को का अर्थ है संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक संगठन (United Nations Educational Scientific and Cultural Organization) । यह संयुक्त राष्ट्र संघ का शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक विकाय है। इसका मुख्यालय फ्रांस के **पेरिस** में स्थित है। इसका कार्य शिक्षा, प्रकृति तथा समाज विज्ञान, संस्कृति तथा संचार के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देना है। इस संस्था का गठन विशेष रुप से 4 नवम्बर 1946 को हुआ था। इस संस्था के गठन का उद्देश्य शिक्षा एवं संस्कृति के अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के शांति एवं सुरक्षा की स्थापना करना है। यह संयुक्त राष्ट्र के चार्टर में वर्णित न्याय, कानून का राज, मानवाधिकार एवं मौलिक स्वतंत्रता हेतु वैश्विक सहमति के निमित है। इसके अंतर्गत 195 सदस्य देश है। इसके अलावा सात सहयोगी सदस्य देश और दो पर्यवेक्षक सदस्य देश हैं। इसके ज्यादातर क्षेत्रीय कार्यालय क्लस्टर के रुप में हैं, जिसके अंतर्गत तीन–चार देश आते हैं, इसके अलावा इसके राष्ट्रीय और क्षेत्रीय कार्यालय भी हैं। यूनेस्को के 27 कलस्टर कार्यालय और 21 राष्ट्रीय कार्यालय हैं। यह संगठन मुख्यतः शिक्षा, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक एवं मानव विज्ञान, सांस्कृतिक एवं सूचना एवं संचार के जरिये अपनी गतिविधियां संचालित करता है। यह विश्व में साक्षरता

बढ़ाने वाले कार्यक्रमों को भी प्रायोजित करता है और वैश्विक धरोहर की इमारतों और पार्कों के संरक्षण में भी सहयोग करता है। भारत की भी कई ऐतिहासिक इमारत एवं पार्क यूनेस्को की विरासत सूची में सूचीबद्ध है। दुनिया भर के 332 अंतरराष्ट्रीय स्वयंसेवी संगठनों के साथ यूनेस्कों के संबंध है। भारत 1946 से ही यूनेस्का का सदस्य है।

हमने यूनेस्को के संबंध में जाना।

### 8.2.8 जी–8 (G–8)

जी–8 या ग्रुप आठ (Group of Eight–G8) के नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय मंच या फोरम बना है।। इस मंच या संगठन की स्थापना फ्रांस द्वारा 1975 में समूह–6 के नाम से विश्व के छः सबसे धनी राष्ट्रों की सरकारों के साथ मिलकर की थी। ये राष्ट्र थे फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका। सन् 1976 में कनाडा को भी शामिल कर लिया गया तथा मंच का नाम बदलकर समूह–7 कर दिया गया। 1997 में इसमें रुस को भी शामिल कर लिया, तत्पश्चात् इस मंच का नाम समूह–8 (Group–8) हो गया। समूह–8 के अंतर्गत सदस्य देश यूरोपियन संघ का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। इस संस्था का उपयोग शिखर सम्मेलन के अंतर्गत, सदस्य राष्ट्रों की सरकारों के प्रमुख भाग लेते हैं। प्रत्येक वर्ष, इस बैठक की मेजबानी का दायित्व सदस्य राष्ट्रों में इस क्रम में घुमता हैः फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, रुस, जर्मनी, जापान, इटली और कनाडा।

## 8.4 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

1. विश्व में शांति हेतु स्थापित प्रमुख संस्थाओं को वर्णित करें।
   Describe the important organization for World Peace.
2. यू० एन० ओ० तथा यूनेस्को के कार्य एवं कार्यों में अंतर को बताएँ।
   Describe the functions of UNO and UNESCO and differenciate between their work.
3. निम्नलिखित बिंदुओं पर टिप्पणी लिखें?
   Write short notes on the following topics:
   (a) नाटो (NATO)
   (b) आसियान (ASEAN)
   (c) नाम (NAM)
   (d) यूनेस्को (UNESCO)